

## ॥ श्रीमद्भगवद्गीता विवेचन सारसंक्षेप ॥

### अध्याय 2: सांख्ययोग

4/5 (श्लोक 42-53), रविवार, 20 नवम्बर 2022

व्याख्याकार: गीता विशारद माननीय श्रीनिवास वर्णेकर महाशय

इউटिउव लिंक: <https://youtu.be/M1Oicl-49lc>

## समत्त्व बुद्धि एवं कर्मयोग द्वारा सच्चिदानन्द प्राप्ति

मोक्षदायिनी एकादशीर शुभ दिने प्रार्थना, गुरु वन्दना ओ देशभक्तिर संकल्प निसे दीप प्रज्ज्वलनेर मध्य दिसे आजकेर विवेचन सत्र शुरु हय। अवसादग्रस्त, हताशाग्रस्त, अर्जुन ताँर गाक्षीव धनुके माटिते रेखे युद्धक्षेत्रे भगवनेर सामने बसे पडेन। तार मने एकटा भय छिल ये, श्रीकृष्ण तार उपर क्रुद्ध हयेछेन। तई तिनि कृष्णेर शरणे आश्रय नेन।

शिष्यस्तेहहं शधि मां त्वां प्रपन्नम्॥२.०१

तखन भगवान श्रीकृष्ण अर्जुनके आत्तुतत्त्वेर मूल तत्त्वेर कथा बललेन। आत्ता सम्पर्के भगवान बलेछेन ये एटि चिरन्तन, अविनश्वर, एके हत्या करा यय ना वा ज्वालानोओ यय ना, मनुष्येर देह मारा यय, यार जन्य शोक करा उचित नय। परेर अध्याये, भगवान आत्तार परिचय विस्तारितभावे व्याख्या करेछेन।

द्वितीय अध्यायटिके "सृती अध्याय" बला हय, कारण एते संक्षेपे समग्र गीतार एकटि तालिका तैरि करा हयेछे बले मने करा हय। ए पर्यन्त सांख्य योगेर सारमर्म व्याख्या करा हयेछे एवं एरपर भगवान कर्मयोगेर कथा बलबेन। एटि एमन एकटि योग यार अनुशीलन कारो क्षति करे ना एवं ए वृथाओ यय ना।

वृत्तिमूलक बुद्धि वा स्थिरबुद्धि गुरुत्वपूर्ण, यार साहाये परमात्ता, सच्चिदानन्दके प्राप्तु करा यय। एटि केवल मनुष्य योनितेई संभव कारण एकमात्रे मनुष्यई एमन एकटि प्राणी यार चिन्ता करार बुद्धि आछे। अर्थां संकर्म करार क्षमता तार आछे, अन्याथाय से तो एक पशुेर मतो।

"धर्मैगहीनः पशुभिः समानः"

धर्म वा कर्तव्य किभावे पालन करले भगवद प्राप्ति करा यावे ?

यामिमां(म्) पुष्पितां(म्) वाचं(म्), प्रवदन्त्यविपश्चितः  
वेदवादरताः(फ्) पार्थ, नान्यदस्तीति वादिनः॥42॥

2.43

कामात्मानः(स्) स्वर्गपरा, जन्मकर्मफलप्रदाम्  
क्रियाविशेषबहुलां(म्), भोगैश्वर्यगतिं(म्) प्रति॥43॥

2.44

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां(न्), तयापहृतचेतसाम्  
व्यवसायात्त्रिका बुद्धिः(स्), समाधौ न विधीयते॥44॥

हे पार्थ ! यारा भोगे आसक्तचित्त, कर्मफल प्रशंसकारी वेदवाक्येई यादेर चित्त आकृष्ट, यादेर बुद्धिते स्वर्गई परमप्राप्य वस्तु एवं यारा बले थाकेन ये, स्वर्ग हते वड़ आर किछुई नेई-एईरूप अबिवेकिगण ये पुष्पित अर्थां आपात-मनोहर वाक्य बलेन, या जन्मरूप कर्मफल प्रदान करे एवं भोग तथा ईश्वर्य प्राप्तिर जन्य नाना क्रियार वर्णना करे, सेईसकल वाक्य द्वारा यादेर चित्त अपहृत हये भोग ओ ईश्वर्येर प्रति आसक्त हय, तादेर परमात्माते निश्चयात्त्रिका शुद्धा बुद्धि हते पारे ना। 82-88

विवेचनः यादेर निश्चयात्त्रिका बुद्धि अर्थां ईश्वरेर प्रति निश्चल भक्ति थाके, ताराई केवल तादेर लक्ष्ये स्थिर थाके। तारा धर्मशील हय एवं परमात्मा प्राप्तिर पथे अबिचल थाके। यादेर बुद्धिभ्रष्ट हयेछे वा यारा विवेकवर्जित, तादेर कि हवे?

**अविपश्चितः** अर्थां यारा अस्थिरचित्त, यारा अनिश्चित अवस्थाय रयेछे। केन एमन हय ? मन यखन सुन्दर कथार जाले जड़िये याय एवं ताकेई सत्य भेवे विश्वास करते शुरु करे।

वेद शास्त्रे सुख प्राप्तिर अनेक उपाय वला हयेछे, कि करले स्वर्गेर सुख पाओया याय? एकजन विवेकहीन व्यक्ति एटिकेई सबचेये वड़ सुख बले मने करे एवं एर वक्त्रने आटके याय। वेद आमामेदेर मा एवं एकजन मा येमन सर्वदा तार सन्तानेर मङ्गलकामना करेन, सेईप्रकार वेदओ आमामेदेर कल्याण चाय, किन्तु एकजन मानुष यदि तार मायेर प्रति भालवासाय आटके याय तवे से सन्तानई थेके यावे, उन्नति कीभावे करवे? मायेर साथे आमामेदेर तो थाकते हवे, किन्तु तार पाशापाशि आमामेदेर लक्ष्य अर्जनेर दिके एगिये येते हवे। शुधु सुखे डुवे थाकले हवे ना, सुखेर अधीन हये आमरा कीभावे निजेर लक्ष्य थेके विच्युत हये यাই, ता एकटि उदाहरण द्वारा बोव्वा यावे।

ग्रीष्मे परीष्कार समय दुई वन्धु एकसाथे पड़ाशोना करे, तादेर एकजनेर वाड़िते क्रम कुलार आछे, तबुओ से छादेर घरे गरमेर मध्ये वसे पड़ाशोना करे कारण कुलारेर ठाल्हा हाओयाय से घुमिये पड़ले से तार कर्तव्य थेके विच्युत हये पड़वे एवं ज्ञान अर्जनेर लक्ष्य थेके पथभ्रष्ट हये पड़वे।

वेदे अनेक प्रकार क्रियार विवरण आछे, या सम्पन्न करले स्वर्गेर सुखओ पाओया संभव, किन्तु परमात्मा तत्त्व पाओया संभव नय। एर अर्थ एई नय ये वेद भूल। वेद भूल नय, आमामेदेर एर तांपर्य वुव्वाते हवे एवं स्थिरबुद्धि

হয়ে কাজ করতে হবে। এখানে ভগবান অর্জুনকে একটি গুরুত্বপূর্ণ বার্তা দিয়েছেন যে বেদকে রক্ষা করতে হবে, এর পালন করতে হবে এবং এর যা নিহিত আছে, তা আমাদের নিজের আচরণে প্রয়োগ করতে হবে, কতদিন তুমি মায়ের আঁচলের নীচে থাকবে? আর কতকাল সুখের সমুদ্রে ডুবে থাকবে? পরম লক্ষ্য উপনীত হওয়ার জন্য জাগতিক সুখ-সমৃদ্ধিকে বিস্মৃত হয়ে এগিয়ে যেতে হবে।

2.45

## ত্রৈগুণ্যবিষয়া বেদা, নিষ্ট্রৈগুণ্যো ভবার্জুন নির্দ্বন্দ্বো নিত্যসত্ত্বস্হো, নির্যোগক্ষেম আত্মবান্ ॥45 ॥

হে অর্জুন! বেদ পূর্বোক্ত ভাবে ত্রিগুণের কার্যরূপ সমস্ত ভোগ এবং তারই সাধনের প্রতিপাদক : সুতরাং তুমি ঐসব ভোগ এবং তার সাধনে আসক্তি বর্জিত হও, হর্ষ শোকাদি দ্বন্দ্ববহিত ও নিত্যবস্তুতে (পরমাত্মাতে) স্থিত হও এবং যোগ(১)-ক্ষেমের(২) আকাঙ্ক্ষাহীন তথা আত্মপরায়ন হও। ৪৫

বিবেচন: বেদ আমাদের শেখায় যে সত্ত্ব, রজ এবং তম এই তিনটি গুণের প্রভাবের মধ্যে থেকেও কিভাবে সত্ত্ব গুণ বৃদ্ধি করা যায়। এই অধ্যায়ে মূল বিষয়গুলি তালিকাভুক্ত করা হয়েছে। তিনটি গুণের ক্রিয়া কীভাবে চলে? চতুর্দশ অধ্যায়ে এটি বিশদভাবে ব্যাখ্যা করা হয়েছে এবং গুণাতীতের বৈশিষ্ট্যও বিস্তারিত ভাবে বলা হয়েছে। পরম তত্ত্বকে প্রাপ্ত করতে হলে গুণাতীত হওয়া আবশ্যিক। গুণাতীত জাগতিক ভোগ বাসনাকে অতিক্রমণ করে সমস্ত দ্বন্দ্ব থেকে মুক্ত হয়ে যায়। সুখ-দুঃখ, লাভ-ক্ষতি, জয়-পরাজয় বা শীত-উষ্ণ থেকে সে প্রভাবিত হয় না। সর্বদা পরমতত্ত্বকে হৃদয়ে সমাহিত করার সাধনা করে যেতে হবে, চিন্তন করতে হবে কারণ এটিই মহত্তম লক্ষ্য।

**নির্যোগ ক্ষেম:** যোগক্ষেমের চিন্তা ত্যাগ করে আমরা যখন পরমাত্মা তত্ত্বের পথে চলি তখন আমাদের চিন্তা স্বয়ং ভগবান করবেন, নবম অধ্যায়ে ভগবান বলেছেন- "যোগক্ষেমং বহাম্যহম্"।

**যোগ মানে অপ্রাপ্যকে প্রাপ্ত করা এবং ক্ষেম মানে যা অর্জিত হয়েছে তা রক্ষা করা।**

যে ব্যক্তি ভাড়া বাড়িতে থাকে, সে তার নিজস্ব বাড়ি বানাবার আশা রাখে, এ হলো যোগ। তার সেই বাড়ি যেন টেকসই হয় যাতে সেই বাড়ি দীর্ঘকাল মজবুত থাকে, বাড়ির দেখাশুনো করা হলো ক্ষেম। গুণাতীত এসব অতিক্রম করেছেন। তিনি জিতেন্দ্রিয়, যাঁর ইন্দ্রিয় এবং ইচ্ছার উপর সম্পূর্ণ নিয়ন্ত্রণ থাকে। ষষ্ঠ অধ্যায়ে ভগবান আত্মসংযম করার জন্য জ্ঞান প্রদান করে ব্যাখ্যা করবেন যে, কীভাবে একজন মানুষ জিতেন্দ্রিয় হতে পারেন, আত্মবান হয়ে উঠতে পারবেন। প্রকৃতির তিনটি গুণের চিন্তন ত্যাগ করে, আমাদের সাক্ষীভাব নিয়ে দেখতে হবে এবং শিখতে হবে যে কোন গুণটি কার উপর আধিপত্য বিস্তার করে।

"বেদঃ সর্ব হিতার্থায় " জ্ঞানীরা সকলের কল্যাণের জন্য বেদের প্রয়োগ করেন এবং যিনি সকলের কল্যাণ কামনা করেন তাকে যোগী বলা হয়।

2.46

## য়াবানর্থ উদপানে, সর্বতঃ(স্) সম্প্লুতোদকে তাবান্ সর্বেষু বেদেষু, ব্রাহ্মণস্য বিজানতঃ ॥46 ॥

সর্বত্র পরিপূর্ণ জলাশয় প্রাপ্ত হলে ক্ষুদ্র জলাশয়ে মানুষের যেটুকু প্রয়োজন থাকে, ব্রহ্মতত্ত্বজ্ঞানী ব্রাহ্মণের বেদে ততটাই প্রয়োজন থাকে ৪৬

**বিবেচন:** বিজানত - যিনি বিশেষভাবে ব্রহ্মকে জানার চেষ্টা করেন। ব্রাহ্মণ - যিনি পরব্রহ্মকে জানেন, ব্রহ্ম জ্ঞানী।

যেমন, কোনো বড় জলাশয়ের ধারে বা গঙ্গার তীরে বসে কেউ তার বাড়ির জলের নল বা জলের কোনও ছোট উৎসের কথাও চিন্তাও করে না, কারণ তিনি জলের মহাস্রোতের খোঁজ পেয়ে গেছেন। একইভাবে একজন পরম জ্ঞানী বেদের উপযোগ অন্যের কল্যাণের জন্য করেন। তিনি ছোট ছোট আনন্দপ্রাপ্তির অহেতুক কামনা করেন না এবং তিনি এসব দ্বারা প্রভাবিতও হন না। সচ্চিদানন্দ প্রাপ্তির পর, তার নিজের জন্য বেদের প্রয়োজন নেই, তিনি নিজের জন্য কিছু চান না, তার অভীষ্ট কেবল পরমার্থ।

2.47

## কর্মণ্যেবাধিকারস্তে, মা ফলেষু কদাচন মা কর্মফলহেতুর্ভূঃ(র), মা তে সংগোস্ত্বকর্মণি॥47॥

কর্মই তোমার অধিকার, ফলে নয়। অতএব তুমি কর্ম-ফলের হেতু হয়ে না আবার কর্মত্যাগেও যেন তোমার প্রবৃত্তি না হয়। ৪৭

বিবেচন:এটি ভগবদগীতার মুখ্য শ্লোক। যার মধ্যে ভগবদগীতার সারমর্ম রয়েছে। এই শ্লোকটিকে সম্পূর্ণরূপে না পড়ে এবং না বুঝে, একটি মাত্র পংক্তি পড়ে এর ভুল ব্যাখ্যা করা হয়।

এর চারটি চরণে চারটি গুরুত্বপূর্ণ বিষয় বলা হয়েছে:-

1. **কর্মণি এব তে অধিকার:** আমাদের শুধুমাত্র কাজ করার অধিকার বা ক্ষমতা আছে। কর্মের পরিমাণের ওপর আমাদের কোনো অধিকার নেই।

2. **মা ফলেষু কদাচন -- আমাদের ফলের প্রত্যাশা করার অধিকার নেই। কর্ম করলে অবশ্যই ফল পাওয়া যায়। আমাদের কর্ম কখন এবং কতখানি করতে হবে তার ওপরও কোনো অধিকার আমাদের নেই।** মন, বুদ্ধি ও অঙ্গ-প্রত্যঙ্গের সাহায্যে আমরা কর্ম তো করতে পারি, কিন্তু কর্মফল আমাদের বশে থাকে না। যদি ফলই না পাওয়া যায়, তাহলে কাজ করার প্রেরণা কি করে আসবে?

3. **মা কর্ম ফল হেতুর্ভূঃ** - আমরা যদি কাজই না করি তাহলে ফল পাওয়ার আশা করাই বৃথা, সুতরাং, আমাদের ফলের আশা না রেখেই কাজ করা উচিত। এর অর্থ এই নয় যে আপনি চাকরি করুন বা ব্যবসাই করুন, তাতে যা আয় হবে বা যে সুখ আপনি প্রাপ্ত করবেন, সেটি ত্যাগ করে দেওয়া উচিত, তবে এটাও ঠিক যে এর আশা করে আপনার কাজ করা উচিত নয়।

যেমন, একটি বালক কোন সাহায্য ছাড়াই তার পড়াশোনা করে, জ্ঞান অর্জন করাই তার উদ্দিষ্ট লক্ষ্য, সে কোন লোভের জন্য পড়াশোনা করে না বরং সে নিজের জ্ঞান বৃদ্ধির জন্য পড়াশোনা করে। অন্যদিকে, অন্য একটি বালক পড়াশুনা করতে বসে না যতক্ষণ না তার মা তাকে চকোলেট বা আইসক্রিম দিয়ে তাকে পড়ার জন্য প্রলুব্ধ করেন। সেই বালকটি প্রলোভনে পড়েই লেখাপড়া করে। ফল পাব না বলে কি আমাদের কাজই করা উচিত নয়?

4. **মা তে সংগোস্ত্ব কর্মণি --** না, অকর্মণ্য হয়ে থাকা ঠিক নয়। আমাদের অভীষ্ট সকলের কল্যাণ কামনা হওয়া উচিত, জ্ঞানের মর্ম বুঝে তা অর্জনের আকাঙ্ক্ষা, আমরা এইরকম ফলের আশা করতে পারি। কিন্তু আমরা যদি স্বার্থপরের ন্যায় সংকীর্ণ মনোভাবাপন্ন হয়ে শুধুমাত্র নিজের জন্য সুখ কামনা করি, সেটা ঠিক হবে না।

বিপ্লবী বীর সাভরকর একজন প্রখ্যাত আইনজীবী, লেখক এবং কবিও ছিলেন। তিনি মনে করতেন যে তার পড়াশুনা যদি দেশের কোনো উপকারে না লাগে তবে তা বৃথা। দেশকে স্বাধীন করা এবং দেশের নাম উঁচু করারই তার মনের সর্বপ্রথম ইচ্ছা ছিল।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥  
सकलर कल्याण होक, साधु महात्मागणेर एइ अभीष्टइ हओया उचित।

शुधुमात्र निजेर कल्याण चाओया हलो, एकटि संकीर्ण फलेर प्रत्याशा करा, किन्तु फल यखन प्रसारित करा हय, तखन एटि "आमि"-र उपरे उठे यय एवं अभीष्टे परिणत हय। आत्मुकेन्द्रिक (ego centric) हओया उचित नय कारण स्वार्थपर मानुष अभीष्ट प्राप्तु करते पारे ना तइ आमामेदर परोपकारी (geo centric) हओया उचित।

Ego एवं Geo ते एकइ अस्कर आछे, किन्तु Ego हल स्वार्थपरतार सूचक एवं एर विपरीत Geo हल परमार्थेर सूचक।

2.48

### योगसुः(ख) कुरु कर्माणि, सङ्गं(न्) त्यक्तुवा धनञ्जय सिद्ध्यसिद्ध्योः(स्) समो भूत्वा, समत्वं(म्) योग उच्यते॥48॥

हे धनञ्जय ! तुमि आसक्ति त्याग करे एवं सिद्धि असिद्धिते समभावपन्न थेके योगसु हये सकल कर्म करो। एइ समत्वं(१)-केइ योग बला हय। ४८

विबेचनः योग संक्रान्तु गुरुत्त्वपूर्ण व्याख्या एइ श्लोके देओया हयेछे। गीता हल योगशास्त्र, योगेर सारमर्म।

**योगसु-** योगेर मध्ये स्थित हये, परमात्मार साथे निजेके एकात्तु करे देओया, भारत माताके विश्वगुरुर स्थाने उपस्थापन करा, ताके सर्वोच्च शिखरे निये याओयार प्रचेष्टा, आमामेदर अभीष्ट हओया उचित। कर्तव्य करे येते हवे। एर प्राप्ति कवे हवे ता निये चिन्तन करा उचित नय। एइ काज कि शेष करा यावे ? आमामेदर एसब कथा ना भेवे शुधु काज करे येते हवे।

विप्लवी सर्दार भगं सिंके यखन फाँसिते बोलार जन्य निये याच्छिलो, तखन तिनि बलेछिलेन- यतवारइ फाँसि देओया होक ना केन, तिनि प्रतिवारइ जन्म नेबेन एवं भारत मातार मुक्तिर जन्य लडते थाकबेन, कारण तखन भारतेर स्वाधीनताइ छिल एकमात्र उद्दिष्ट लक्ष्य, परिस्थिति याइ होक ना केन। योग अर्थां समत्वं, समभावे स्थित थाका। फुलेर कोमल स्पर्शइ होक वा काँटा विंधे याओयार यत्नणा हलेओ, पाहाड़ रूपी बाधा एले वा पाथरेर वृष्टि हलेओ, प्रतिनियत कर्तव्यरत थाकाकेइ योग बले।

समत्वं चित्ताचं, ये च सार मानवावे

साधक ज्ञानेश्वर महाराज बलेछेन, लाभ-स्फुतिर चिन्ता ना करे काज करे येते हवे, तातेइ आनन्द प्राप्तु करते हवे। मा यखन भालो खार रान्ना करेन, तखन तिनि सेइ काज करेइ आनन्द ओ तृप्ति पान। कर्मके दाँडिपाल्लाय ओजन करा नय, कर्म करे सुख प्राप्तु करेइ प्रकृत समाधि, प्रकृत योग।

2.49

### दूरेण ह्यवरं(ङ्) कर्म, बुद्धियोगाद्भनञ्जय बुद्धौ शरणमन्विच्छ, कृपणाः(फ्) फलहेतवः॥49॥

एइ समत्वरूप बुद्धियोग अपेक्षा सकाम-कर्म नितान्तुइ निकृष्ट। तइ, हे धनञ्जय ! तुमि समत्वरुद्धि योगेर आश्रय नाओ, कारण यारा फलेर हेतु हय अर्थां फलाकाङ्क्षावशतः कर्म करे, तारा अत्यन्त दीन। ४९

বিবেচন: সমত্ববুদ্ধির বিনা ফলের প্রত্যাশা নিয়ে কর্ম করার মনোভাব নিম্নস্তরের পরিচায়ক। এখানে মনে রাখতে হবে যে কোনো কর্মই ছোটো নয়, যোগের বুদ্ধি ত্যাগ করে নিজের কামনা-আকাঙ্ক্ষার জন্য করা কর্ম, নিম্নস্তরের হয়। ফলের আশায় যে কাজ করে সে যেন একজন ভিখারি, দরিদ্র। প্রতিটি মানুষের কর্ম এবং ধর্ম বিভিন্ন সময়ে ভিন্ন ভিন্ন হয়। অর্জুনের মধ্যে দ্বিধা ছিল যে তিনি কোন কর্মের পথটি বেছে নেবেন। নিজের আত্মীয়-স্বজনের প্রতি নিজের কর্তব্য নাকি দেশের স্বার্থে নিজের কর্তব্য? স্বভাবতই দেশের জন্য নিজের কর্তব্য বেছে নেওয়াই উত্তম, অর্জুনের এই দ্বিধা দূর করতে ভগবদগীতার মাধ্যমে ভগবান জ্ঞান প্রদান করেছেন। বড়ো উদ্দেশ্য সাধনের জন্যেও কর্ম করা উচিত। এমন সময়ে সমত্ব বুদ্ধির শরণ নেওয়া উচিত। সমত্ব বুদ্ধি থেকে আমরা কী পাব? পরবর্তী শ্লোকে এর ব্যাখ্যা করা হয়েছে।

2.50

### বুদ্ধিযুক্তো জহাতীহ, উভে সুকৃতদুষ্কৃতে তস্মাদ্যোগায় যুজ্যস্ব, যোগঃ(খ) কর্মসু কৌশলম্ ॥50॥

সমত্ববুদ্ধিযুক্ত পুরুষ ইহলোকেই পাপ এবং পুণ্য দুই-ই পরিত্যাগ করেন অর্থাৎ এগুলি হতে মুক্তিলাভ করেন। তাই তুমি সমত্বরূপ যোগের আশ্রয় নাও ; এই সমত্বরূপ যোগই হল কর্মের কৌশল অর্থাৎ কর্ম বন্ধন হতে মুক্ত হবার উপায়। ৫০

বিবেচন: সমত্ব বুদ্ধি মানে কর্ম যোগকে অনুসরণ করা। এই ধরনের ব্যক্তি তার সৎকর্ম এবং দুষ্কর্ম, উভয়কেই ত্যাগ করে, অর্থাৎ সে তাদের বন্ধন থেকে মুক্ত হয়ে যায়। উদ্দিষ্ট লক্ষ্যের জন্য কাজ করা এবং সেই কর্ম সম্পাদিত করে বিস্মৃত হয়ে যাওয়া, এইরূপ সমর্পিত মনে সৎকর্মের মনোভাব নিয়ে কর্ম করা। এতে করে আমরা পাপ-পুণ্য থেকে মুক্তি পাই এবং এই ভাবেই আমরা বন্ধন থেকে মুক্তি পেতে পারি।

আমরা যখন আমাদের সঞ্চিত পুঁজির হিসাব রাখি, সেখানে টাকা জমার পাশাপাশি খরচেরও হিসেবে লেখা হয়। জমাকৃত অর্থ থেকে খরচ বাদ দিয়ে লাভ-ক্ষতি জানতে পারি এবং এভাবেই আমাদের হিসাব চলতে থাকে। পাপ ও পুণ্যের হিসাব কিছুটা আলাদা। আমরা যত ভালো কাজ করেছি তার হিসাব আমাদের পুণ্যের পুঁথিতে চলে যায় এবং আমাদের পূর্বের পুণ্যগুলোও সেখানে জমা হয়, আমাদের তা ভোগ করতে হয়। একইভাবে, আমাদের দুষ্কর্মগুলি পাপের খাতায় জমা হয়ে যায় এবং আমাদের তা ভোগ করতে হয়। সৎকর্ম করতে গিয়ে যদি কোনো দোষ বা ভুল হয়ে যায়, তাহলে সেগুলিও পাপের খাতায় জমা হয়ে যায়। আমরা যেমন সঞ্চয় থেকে খরচ কমাতে পারি, তেমনি কিন্তু পুণ্য থেকে পাপ কমাতে পারি না, এই দুটোই আমাদের ভোগ করতে হয়, পুণ্য বেশি হলে পাপ কমে না, তা ভোগ করতে হলে আবার জন্ম নিতে হয় এবং পুনঃ কর্ম করতেই হয়। তৃতীয় অধ্যায়ে কর্মযোগের মাধ্যমে এই বিষয়টি বিশদভাবে ব্যাখ্যা করা হয়েছে।

নিষ্কাম কর্ম করে ভুলে যেতে হয়। তাহলে পাপ-পুণ্যের কোনো হিসেব থাকে না এবং মুক্তি লাভ হয়। কর্মের বন্ধন থেকে মুক্ত হতে চাইলে কর্মযোগ গ্রহণ করতে হবে। সুতরাং, নিজের কর্ম করুন। এটাই মুক্তির একমাত্র সরল উপায়, এটিই কাজ করার কুশলতা। কিন্তু চুরি করার ক্ষেত্রে চোরের যে দক্ষতা, তা কখনোই কর্ম যোগ হতে পারে না কারণ এটি নিষ্কাম কর্ম নয়। কর্ম সম্পাদনের সময়ে যোগের চিন্তন করা এবং নিজের অভীষ্ট স্মরণে রাখাই হলো কর্ম কুশলতা।

2.51

### কর্মজং(ম্) বুদ্ধিযুক্তো হি, ফলং(ন্) ত্যক্ত্বা মনীষিণঃ জন্মবন্ধবিনির্মুক্তাঃ(ফ), পদং(ঙ) গচ্ছন্ত্যনাময়ম্ ॥51॥

কারণ সমবুদ্ধিসম্পন্ন জ্ঞানীগণ কর্মজনিত ফল ত্যাগ করে জন্মরূপ বন্ধন হতে মুক্ত হয়ে নির্বিকার পরমপদ লাভ

বিবেচন: ফলের চিন্তা ত্যাগ করে কর্তব্যভাব নিয়ে কর্ম কর। খাষিগণ কর্মযোগে যুক্ত হয়ে ফল ত্যাগ করেন। ত্যাগ মানেই সবকিছু ছেড়ে দেওয়া নয়, বরং ফলের চিন্তা থেকে মুক্ত হয়ে যাওয়া। জন্ম হলে মৃত্যু হবেই, এটি একটি অন্তহীন চক্র। মানুষ এটা বিশ্বাস করে যে মৃত্যুর পরে মুক্তিলাভ হয়, কিন্তু এমন নয়। এই দেহে বাস করেও কর্মফল ত্যাগ করে মুক্ত হওয়া যায়। পরমার্থ প্রাপ্ত করে যখন লক্ষ্যে পরিণত হয়ে যায়, তখন সুখ-দুঃখ বা অন্য কোনো সংকটের পরিণামের চিন্তা থাকে না এবং তখন নির্ভয়ে পরমাত্মা তত্ত্ব প্রাপ্ত করা যায়। এটি পরমতত্ত্ব একমাত্র মনুষ্যই অনুভব করতে পারে ও প্রয়োগ করতে পারে। এই জ্ঞানই ভগবান নবম অধ্যায়ে রাজবিদ্যারাজগুহ্যযোগ রূপে বলেছেন।

## 2.52

### য়দা তে মোহকলিলং(ম্), বুদ্ধিব্যতীরিষ্যতি তদা গন্ত্যসি নির্বেদং(ম্), শ্রোতব্যস্য শ্রুতস্য চ॥52॥

যখন তোমার বুদ্ধি মোহরূপ কর্দম সম্পূর্ণরূপে অতিক্রম করবে, তখন তুমি শ্রুত এবং শ্রোতব্য ইহলোক এবং পরলোক সম্পর্কীয় সমস্ত বিষয় ভোগে বৈরাগ্য প্রাপ্ত হবে। ৫২

বিবেচন: মোহরূপী অন্ধকারকে অতিক্রম করতে হলে ফলের আকাঙ্ক্ষা ত্যাগ করতে হবে। কর্তব্য পালন দ্বারাই দৈব অভীষ্ট প্রাপ্ত করা সম্ভব। কোন কাজ করে কতখানি সুখপ্রাপ্তি হবে, সুখপ্রাপ্তি কখন হবে? স্বর্গের সুখ কেমন হয়, তা কি পাওয়া যাবে? কিভাবে? এই সমস্ত চিন্তা থেকেই মোহ উৎপন্ন হয়, যার পাঁকে আমরা আটকা পড়ে যেতে থাকি। কর্তব্য পালনের দ্বারাই এসবের প্রতি বৈরাগ্যভাব দেখা দেয়। বৈরাগ্য কি? বৈরাগ্য মানেই সবকিছু ত্যাগ করা নয়, এই কথায় ভয় পাওয়া অনাবশ্যক। যারা বৈরাগী, তারা বর্তমান সময়ে বাস করেন। বর্তমান সময়ে থেকে যারা নিঃস্বার্থ ভাবে কাজ করে, সুখ অনুভব করে কিন্তু সুখের অনুভূতিতে নিজেকে নিমজ্জিত করে ফেলে না, তারা দ্বিধা-দ্বন্দ্ব (সুখ-দুঃখ, লাভ-ক্ষতি, জয়-পরাজয়) দ্বারা প্রভাবিত হয়ে বিভ্রান্ত হয় না। তারা সমত্ব ভাব প্রাপ্ত করে।

## 2.53

### শ্রুতিবিপ্রতিপন্ন তে, যদা স্থাস্যতি নিশ্চলা সমাধাবচলা বুদ্ধি:(স্), তদা যোগমবাস্ত্যসি॥53॥

নানা কথার দ্বারা বিক্ষিপ্ত তোমার বুদ্ধি যখন পরমাত্মায় অটল ও স্থির হবে, তখন তুমি যোগপ্রাপ্ত হবে অর্থাৎ পরমাত্মার সঙ্গে তোমার নিত্য সংযোগ স্থাপিত হবে। ৫৩

বিবেচন: এইভাবে সমাধি বা সমত্বভাব প্রাপ্ত করলে বুদ্ধি বিভ্রান্ত হয় না এবং যোগসাধনা হয়। বুদ্ধি ও মন তাদের নিয়ন্ত্রণে থাকবে, তাহলে সচ্চিদানন্দের প্রাপ্তি অনুভব করা যাবে, এটাই মোক্ষলাভ। এটা শুধুমাত্র জীবিত অবস্থায় অনুভব করা যায়। বৈরাগ্য হল মনের অবস্থা যখন কোন প্রকার চিন্তা নেই। মন যখন আসক্তিতে আটকে যায় তখন দুঃখ হয় বা অভিজ্ঞতা ভালো হলে মনে রাখলে অপার সুখ পাওয়া যায়।

এক শহরে একজন কীর্তনকার কীর্তন করছেন, অনুষ্ঠানের পর অত্যন্ত সুস্বাদু খাবারেরও আয়োজন করা হয়েছিল।

তার গানে মুগ্ধ হয়ে পরের বছর তাকে আবার একই শহরে আমন্ত্রণ জানানো হয়। যখন তারা তাদের সহকর্মীদের সাথে সেই শহরের উদ্দেশ্যে রওনা দেয়। তাদের একজনের মনে পড়ল সুন্দর কীর্তন আর অন্যজনের মনে পড়ল সুস্বাদু খাবার কারণ তার মন খাবারে আটকে গেল। এই যে খাবারের প্রতি আসক্তি এখন সে একই খাবার পেলে সুখী নাহলে দুঃখ পায়। এ থেকে স্পষ্ট হয়ে যায় যে, আমাদের মন যা বিক্ষিপ্ত, তাকে ভারসাম্যের দিকে নিয়ে আসা, স্থিতিশীল করার জন্য প্রয়োজন।

## দুঃখে ডুবে যাবে না, সুখের মধ্যে থাকবে না

এখন অর্জুনের মনে এই প্রশ্ন জেগে উঠলো যে মানুষ এত স্থিরবুদ্ধি নিয়ে বাঁচবে কী করে? একেই কি স্থিতপ্রজ্ঞ বলে? তাঁর পরিচয় কি? আগামী বিবেচনে এই সব প্রশ্নের নিবারণ করা হবে। এই অত্যন্ত তথ্যপূর্ণ বিবেচন সত্রের পর একটি প্রশ্নোত্তর পর্ব অনুষ্ঠিত হয়।

### প্রশ্নোত্তর পর্ব :

**প্রশ্নকর্তা:** মিঃ কৃষ্ণ ভট্ট

**প্রশ্ন:** তৃপ্তি অনুভব করা যায়, কিন্তু জীবাত্মা কি আনন্দ অনুভব করতে পারে?

**উত্তর:** সুখের বিপরীত শব্দ দুঃখ, কিন্তু আনন্দের কোনো বিপরীত শব্দ হয় না। যখন বুদ্ধি শুদ্ধ হয়ে ভগবানের সাথে যুক্ত হয়ে যায়, তখন সেটিই সচ্চিদানন্দের প্রাপ্তি, যা জ্ঞানীরা অনুভব করতে পারে।

**প্রশ্ন:** আশীর্বাদ চাওয়াকে ফলের আশা করা বলা যায় কি ?

**উত্তর:** বড়দের কাছে আশীর্বাদ চাওয়া আমাদের অধিকার। সমর্পিত ভাব নিয়ে, নতমস্তকে আশীর্বাদ চাওয়া যায়। জীবনরূপী জ্বরের অবস্থায় পরমাত্মাতত্ত্ব প্রাপ্ত করা দুধের মধ্যে চিনি মেশানোর মতো। এটা বেদ থেকে শেখা যায়। ভগবদগীতা বেদান্তের সাথে আছে।

**প্রশ্নকর্তা:** শ্রী নরেন্দ্র প্রসাদ

**প্রশ্ন:** তৃতীয় অধ্যায়ে, ঈশ্বর কর্ম সম্পাদনের নির্দেশ দিয়েছেন (উনিশ, বাইশ, বাইশ এবং তেইশতম শ্লোক), যে আত্মতপ্ত হয়ে পরমাত্মার সাথে একরূপ হয়ে যেতে এবং নিজের কোনো ইচ্ছা ত্যাগ করতে, তাহলে আমাদের কি করা উচিত ? ।

**উত্তর:** নিজের জন্য কিছু করার প্রয়োজন নেই, তবে অন্যের হিতের জন্য তার কোনো বাধ্যবাধকতা নেই। যখন কারুর সন্তানের বিয়ে হয়ে যায়, তখন সে তার দায়িত্ব থেকে মুক্ত হয়ে যায়। এর অর্থ এই নয় যে সে তার বন্ধু বা আত্মীয়কে কোনো সাহায্য করতে পারবে না। স্বয়ং ভগবান, ত্রিভুবনের হয়েও, গোকুলে গোয়লা রূপে তাঁর নিজের দায়িত্ব পালন করে গরু লালন পালন করেছিলেন এবং মহাভারতের যুদ্ধে অর্জুনের সারথিও হয়েছিলেন, রথের ঘোড়াগুলিরও যত্ন নেন। ভগবানের এই সব করার দরকার ছিল না, কিন্তু তিনি একজন প্রকৃত যোগী ছিলেন, তাই মানুষের কল্যাণের জন্য কর্তব্য পালনে কোনো ক্ষতি নেই।

**প্রশ্নকর্তা:** শ্রী লক্ষ্মী নারায়ণ

**প্রশ্ন:** আমরা যখন কোন পাপ করি, গুরু তার প্রতিকার বলে দেন, তাহলে কি আমাদের ফল ভোগ করতে হবে না?

**উত্তর:** পাপ ও পুণ্য পূর্ব কর্মের ফলস্বরূপ হতে পারে, এগুলোকে প্রারন্ধ কর্ম বলে। বেদে এমন পদ্ধতি আছে যার

দ্বারা তাদের প্রভাব হ্রাস করা যায়।

প্রারন্ধ তিন প্রকারের-

- ধীর প্রারন্ধ
- মধ্যম প্রারন্ধ
- তীব্র প্রারন্ধ

ধীর ও মধ্যম প্রারন্ধের প্রভাব কমানো যায়, কিন্তু তীব্র প্রারন্ধের যন্ত্রণা ভোগ করতে হয়। যদি প্রারন্ধে (ভাগ্যে) থাকে যে আজ তাকে নির্জলা থাকতে হবে, তবে সে এক ফোঁটা জলও পাবে না, তাই কেউ যদি একাদশীর উপবাস করে, সে আনন্দের সাথে এই প্রারন্ধ ভোগ করবে এবং যে ব্যক্তি বনের মাঝে ঘুরছে, সে ক্ষুধা-পিপাসায় বিমর্ষচিত্তে এই প্রারন্ধ ভোগ করবে, কিন্তু তবুও উভয় ব্যক্তিকেই প্রারন্ধের ভোগ যন্ত্রণা সহ্য করতে হবে।

কৃষ্ণ বন্দনার মাধ্যমে আজকের বিবেচন সত্র সমাপ্ত হয়।



আমাদের বিশ্বাস যে আপনার এই বিবেচনাটি পড়ে ভালো লেগেছে। দয়া করে নিম্নে দেওয়া লিঙ্কটি ব্যবহার করে আপনার মূল্যবান মতামত দিন -

<https://vivechan.learngeeta.com/feedback/>

**বিবেচন সারটি পড়ার জন্য, অনেক ধন্যবাদ!**

আমরা সকল গীতা সেবী, এক অতুলনীয় প্রত্যাশা নিয়ে, বিবেচনের অংশগুলি বিশুদ্ধ ভাবে আপনার কাছে পৌঁছানোর প্রচেষ্টা রাখি। কোনো বানান বা ভাষারগত ত্রুটির জন্য আমরা ক্ষমাপ্রার্থী।

**জয় শ্রীকৃষ্ণ!**

সংকলন: গীতাপরিবার – রচনাশ্রমিক লেখন বিভাগ

**প্রতি ঘরে গীতা, প্রতি হাতে গীতা!!**

আসুন আমরা সবাই গীতা পরিবারের এই ধ্যেয় মন্ত্রের সাথে যুক্ত হয়ে নিজেদের পরিচিত বন্ধুবান্ধবদের গীতাশ্রেণী উপহার হিসাবে পাঠাই।

<https://gift.learngeeta.com/>

গীতা পরিবার একটি নতুন উদ্যোগ নিয়েছে। এখন আপনি পূর্বে পরিচালিত সমস্ত ব্যাখ্যার (বিবেচনের) ইউটিউব ভিডিও দেখতে পারেন এবং PDF পড়তে পারেন। অনুগ্রহ করে নিচের লিঙ্কটি ব্যবহার করুন।

<https://vivechan.learngeeta.com/>

**॥ গীতা পড়ুন, পড়ান, জীবনে গ্রহণ করুন ॥**

**॥ ॐ শ্রীকৃষ্ণার্ণমস্তু ॥**